# महाकवि जगदीश भट्ट का साहित्यिक अवदान

✧ डॉ. कृष्णबीर सिंह

महाकवि जगदीश भट्ट रीतिकालीन काव्य परम्परा के विशिष्ट आधार स्तम्भ के रूप में थे किन्तु समय, इतिहास लेखक एवं शोधकर्त्ताओं की नजरों से विस्मृत उक्त कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं परवर्ती इतिहासकार अछूते रहे हैं। किन्तु मिश्र बन्धु विनोद में जगदीश भट्ट के विषय में उल्लेख उपलब्ध है।[1] इसी भाँति नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित-हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज-रिपोर्ट में उक्त विवरण प्राप्त होता है[2]-(क) जगदीश (जगन्नाथ)-श्रीकृष्ण भट्ट के पुत्र (ख) जगदीश (कवि)-श्रीकृष्ण भट्ट (कलानिधि) के पुत्र तथा जयपुर नरेश सवाई जगत सिंह के आश्रित, सं. 1862 के लगभग। (ग) जगन्नाथ-उपनाम-जगदीश-श्रीकृष्ण भट्ट के पुत्र, सं. 1829 के लगभग।

यहाँ यह स्पष्ट किया जाना अपेक्षित है कि श्रीकृष्ण भट्ट के पुत्र का नाम जगदीश भट्ट था अत: क, ख, ग क्रम के नाम एक ही व्यक्ति के हैं। संभवत: जगन्नाथ नाम की छाप का कोई पद खोजकर्त्ताओं को प्राप्त हो गया हो। वैसे जगदीश भट्ट के लगभग समस्त ग्रन्थों की पुष्पिका में उनके पिता श्रीकृष्ण भट्ट एवं अग्रज द्वारकानाथ भट्ट का उल्लेख अवश्य मिलता है।

अत: महाराजा सवाई प्रताप सिंह के समय में देवर्षि जगदीश भट्ट एक उत्कृष्ट कवि थे जो कवि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट के द्वितीय (छोटे) पुत्र थे।[3]

**जन्म**–डॉ. मोतीलाल मेनारिया आपका जन्मकाल सं. 1780 मानते हैं जबकि डॉ. सत्येन्द्र भी आपका जन्मकाल सं. 1780 ही मानते हैं।

**मृत्यु**–साहित्यिक वनवास दिये जाने के कारण विद्वान इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अधिक परिचित नहीं हैं किन्तु इनके ग्रन्थों में व्यक्त प्रौढ़ विद्वता के आधार पर वे इस बात से सहमत हैं कि ये 80 वर्ष तक जीवित रहे। किन्तु प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

**पारिवारिक स्थिति**–आयु एवं रचनाकाल के विषय में आगे चर्चा करेंगे। श्रीकृष्ण भट्ट कवि कलानिधि संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान थे। इनके क्रमश: दो पुत्र हुए-द्वारकानाथ भट्ट एवं जगदीश भट्ट। जगदीश भट्ट अपने चचेरे भाई चिमनलाल के यहाँ दत्तक पुत्र रूप में चले गये।[5]

**गोत्र**–जगदीश भट्ट मूलत: गौतम गोत्रिय, कृष्ण यजुर्वेदीय, तैलंग भट्ट ब्राह्मण थे।[6]

**इष्टदेव**–जगदीश भट्ट के इष्टदेव 'हयग्रीव' थे जिसकी छाप उनके समस्त ग्रन्थों के मंगलाचरण में दिखती है।

**शिक्षा**–आपके पिता एवं अग्रज दोनों ही काव्य, साहित्य एवं भाषा के मर्मज्ञ विद्वान थे। वैसे आपने अपने अग्रज से शिक्षा ग्रहण की। यही कारण है कि आपने अपने अग्रज को गुरु रूप में यत्र-तत्र उल्लेखित किया है।

**राज्याश्रय**–रीतिकालीन परम्पराओं में से एक राज्याश्रय परम्परा के अन्तर्गत जगदीश भट्ट द्वारा रचित ग्रन्थों में चार राजाओं के उल्लेख मिलते हैं-(1) सवाई पृथ्वीसिंह (सं. 1824-1835 वि.), (2) सवाई प्रतापसिंह (सं. 1835-1860 वि.), (3) सवाई जगतसिंह (सं. 1860 वि.-1875 वि.), (4) गौवड़ाघीस किशोरसिंह।

**कविमण्डल और जगदीश भट्ट**–तत्कालीन कवि और काव्य परम्परा के अनुसार राज दरबार में कवि बाईसी या पच्चीसी रखा करते थे। जगदीश भट्ट का अधिक समय जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह के राजदरबार में व्यतीत हुआ। राजा प्रतापसिंह स्वयं भी 'ब्रजनिधि' नाम से रचनाएँ करते थे। इनकी 'ब्रजनिधि' ग्रन्थावली नागरी प्रचारिणी से प्रकाशित है।

महाकवि जगदीश भट्ट शिक्षा मंत्री के पद पर सेवारत थे तथा ऐसे अनेकों प्रमाण सिटी पैलेस पोथीखाने के ग्रन्थों में उपलब्ध है कि जगदीश भट्ट ने अनेकों बार पद्माकर की रचनाओं में संशोधन किया था। संक्षेप में कविमण्डल के प्रमुख कवि नामों को उल्लिखित किया जा रहा है-जगदीश भट्ट, गणपति भारती, नाथ कवि, पद्माकर, द्वारकानाथ भट्ट, चुन्नीलाल भट्ट, रसरासि रामनारायण, श्रीकृष्ण मिश्र प्राङ्विवाक्, गुमानीराम, शिवदास, शंकर कवि या शंकरलाल, चतुरदास, कृष्णदत्त, किशोरी अली, चन्दलाल, भोलानाथ, शंभुराम, मनीराम, मुरलीधर भट्ट, अमृतराम आदि।

**कृतित्व**–जगदीश भट्ट के लिए उक्ति प्रसिद्ध है-'**कर कलम रुके तो कर कलम कराइये**'[7]–अर्थात् यह पंक्ति उनकी रचनाधर्मिता की ओर स्पष्ट संकेत करती है। इनके ग्रन्थों में आत्म परिचय लगभग नगण्य है किन्तु प्रस्तुत पद में उनके व्यक्तित्व का परिचय मिलता है-

**कवित्त**

**न्याइ व्याकरन सांख पातंजलि बेद अरु**
**मीमांसक ग्रंथनि अभ्यास जिन कीनों है।**
**कवि जगदीश जे वे साहित की मूरति हैं**
**सूरति सुबेस सेवकनि सुख चीन्हौं है।।**
**तेज के प्रभाकर सुभाकर सभानि माँझ**
**ज्ञान के प्रभाव सौं अज्ञान तम छीनौं है।**
**तिन सरसुति गुरुदेव को हौं अनुचर**
**कृपा करि निज मंत्र चिंतामनि दीनौ है।।**[8]

मैं पुन: दु:ख के साथ अपनी बात कह रहा हूँ कि जगदीश भट्ट जैसा महापण्डित जो पद्माकर जैसे महाकवि की रचनाओं में संशोधन एवं सम्पादन की योग्यता, क्षमता रखता था, इस भाँति हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों एवं अन्य विद्वतजनों द्वारा विस्मृत कर दिया गया, हिन्दी साहित्य का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। खैर।

शोध पत्र के विषयानुसार जगदीश भट्ट द्वारा रचित ग्रन्थों के साहित्यिक अवदान एवं काव्यशास्त्र को देन के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत विचार किया जाना इसलिए अनिवार्यत: अपेक्षित है ताकि हिन्दी साहित्य के इतिहास में जगदीश भट्ट को सम्मानीय स्थान प्राप्त हो सके एवं साहित्य प्रेमियों को इस अज्ञात कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त हो सके ताकि वे रीतिकालीन कवियों की पंक्ति में जगदीश भट्ट की भी उपस्थिति दर्ज कर सकें।

सर्वप्रथम रीतिकालीन कवियों पर शोधकार्य किये गये शोधार्थियों एवं अन्य विद्वानों की मान्यता पर दृष्टिपात करते हैं-

डॉ. गजानन मिश्र ने जगदीश भट्ट द्वारा रचित 14 ग्रन्थों की सूचना प्रस्तुत की है।[9] वहीं डॉ. मोतीलाल मेनारिया इनके द्वारा रचित 15 ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत करते हैं।[10] डॉ. सत्येन्द्र ने मात्र सात ग्रन्थों की सूचना प्रेषित की है।[11] नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित खोज पुस्तक में जगदीश कवि का एक जगन्नाथ (उपनाम) जगदीश के तीन ग्रन्थों की सूचना उपलब्ध है।[12] पण्डित उमेश चतुर्वेदी ने अपने लेख में भयानक भूल की है। उन्होंने जगदीश भट्ट द्वारा रचित 12 ग्रन्थों को गोविन्दराव तैलंग (यह कवि सवाई जगत सिंह पुत्र सवाई प्रतापसिंह, जयपुर के राजाश्रय में था) द्वारा रचित बता दिया है। निस्सन्देह पं.

विभागाध्यक्ष हिन्दी साहित्य, एस.एस.जी. पारीक (पी.जी.) कॉलेज, जयपुर

उमेश चतुर्वेदी ने मौखिक सूचना के आधार पर अथवा भूलवश ऐसा किया हो। कारण, मैं इन ग्रन्थों को प्रत्यक्ष रूप में देखकर अध्ययन कर चुका हूँ। इसी आधार पर यह घोषणा कर रहा हूँ। खैर।

इसी क्रम में डॉ. सन्त कुमार शर्मा ने 17 ग्रन्थों[13] की एवं डॉ. पार्वती उपाध्याय मात्र 7 ग्रन्थों की सूचना उपलब्ध करवाते हैं।[14] पण्डित गोपाल नारायण बहुरा ने जगदीश भट्ट द्वारा रचित 13 ग्रन्थों की सूचना अपनी पुस्तक में प्रकाशित की है।[15]

पुनः इसी क्रम में मैं महाकवि जगदीश भट्ट के निम्नलिखित 38 हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचना, विवरण एवं प्रमाण प्रस्तुत कर रहा हूँ[16]–

1. अलंकार कौतुक 2. गोविन्द जू को नखशिख 3. गोविन्द लीलामृत 4. प्रताप पीयूष 5. प्रहेलिका प्रकाश 6. बहादुर विजै रासो 7. रस रत्न सागर 8. लग्न पचीसी 9. वनपर्व भाषा 10 शल्य पर्व भाषा 11. बसन्तराज शकुन वचनिका 12. ब्रजनिधि मंगल ब्याहुलो 13. शीताष्टक 14. छक पचीसी 15. शिव स्तुति 16. कवित्त महादेवजी रा 17. मुद्राराक्षस भाषा 18. नखशिख वर्णन 19. माधोविजय विनोद 20. एकलिंग जी री निसाणी 21. जगत रस रंजन 22. जगत भक्ति विलास 23. अमरूशतक (पद्यानुवाद) 24. किशोर सुख सागर 25. काव्य विनोद 26. सरस्वती प्रसाद 27. अलंकार प्रकाश 28. भक्ति अरगजा 29. पद्सकाल 30. पद पंकज 31. ब्रह्मवैवर्त पुराण (पद्यानुवाद) 32. भागवत दशम स्कन्ध (पद्यानुवाद) 33. शिशुपालवध महाकाव्य (पद्यानुवाद) 34. भर्तृहरिशतक का अनुवाद 35. वल्लभाचार्य के षोडश ग्रन्थों का अनुवाद 36. लक्ष्यात्मक ग्रन्थ 37. वीर रस रत्नाकर (वीर हजारा) 38. कवित्त संग्रह

उपर्युक्त ग्रन्थों के उपलब्ध स्थान का विवरण प्रस्तुत किया जाना समीचीन प्रतीत होता है–क्रम संख्या 1 से 13 तक के ग्रन्थ महाराजा सवाई मानसिंह (द्वितीय) संग्रहालय जयपुर के पोथीखाना में सुरक्षित हैं। क्रम संख्या 14 से 16 तक के ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में, क्रम संख्या 17 से 20 तक के ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान–उदयपुर में तथा क्रम संख्या 26 व 27 तक के ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जयपुर में सुरक्षित हैं। क्रम संख्या 28 से क्रम संख्या 36 तक के ग्रन्थों का विवरण देवर्षि कलानाथ शास्त्री के पास उपलब्ध है–प्रमाण–इनके पिता (स्व.) देवर्षि श्री मथुरानाथ शास्त्री द्वारा लिखित (निजी) हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची है। क्रम संख्या 37 एवं 38 दोनों ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान–जयपुर में सुरक्षित हैं। यद्यपि ये दोनों संकलित ग्रन्थ हैं।

उपलब्ध ग्रन्थों को विषय के आधार पर निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

**(अ) रस अलंकार**-1. प्रताप पीयूष 2. रस रत्नाकर 3. अलंकार कौतुक 4. अलंकार प्रकाश 5. शिव-नख वर्णन 6. गोविन्द जू को नख शिख 7. जगत रस रंजन 8. किशोर सुख सागर 9. सरस्वती प्रसाद 10. वीर रस रत्नाकर (वीर हजारा) **(ब) काव्य–** 1. लगन पचीसी 2. छक पचीसी 3. शीताष्टक 4. बहादुर विजै रासो 5. माधो विजय विनोद 6. ब्रजनिधि मंगल ब्याहुलो 7. कवित्त संग्रह

**(स) भक्ति–**1. शिव स्तुति 2. कवित्त महादेवजी रा 3. एकलिंगजी री निसानी

**(द) अनुवाद–**1. अमरू शतक 2. पीयूष पान 3. मुद्राराक्षस 4. जगत भक्ति विलास 5. महाभारत वन पर्व 6. महाभारत शल्य पर्व 7. बसन्तराज शकुन वचनिका

**(न) प्रकीर्ण–**1. प्रहेलिका प्रकास

शोध की दृष्टि से, महाकवि जगदीश भट्ट एवं उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की मात्र सूचना प्रेषित कर विराम देना न्यायोचित्त नहीं है जबकि उनके ग्रन्थों में रचित पद्यों की बानगी प्रस्तुत न की जाये। अतः मैं संक्षेप में उनके कृतित्व को प्रस्तुत कर रहा हूँ–

**(क) रस, अलंकार विषयक ग्रन्थ–प्रताप पीयूष** (ग्रन्थ संख्या 3405, पत्र संख्या-105, आकार-23×17.05 से.मी. पद्य संख्या-341)

**विषय–**नायक-नायिका भेद, षट् ऋतु वर्णन, विभिन्न रसों का वर्णन। उदाहरण-।। नाइका लछन-दोहा।।

**जाको लषि कैं होत हैं मन में रस बरसाव।**
**ताहि नाइका कहत हैं जिनके बुद्धि प्रभाव।। 25।।**
।। नाइका भेद।।
**तीन भाँति की नाइका पहल सुकीया नाम।**
**परकीया दूजी बहुरि सामान्या अभिराम।। 28।।**

श्रम लक्षण का वर्णन देखिये–

**चुम्बन चालन और आलिंगन रीति सबै बिपरीति उधारी।**
**आधक रैनि को कंत हिया पर सोई कपोल कपोल पै धारी।।**
**फैलि रहै कच षूलि रहे कुचहार सिराहन पगाति कौं सारी।**
**ह्वै रही चित्र लिखी सी सुहागिनि मंद हू हालन कीन करारी।। 271।।**

प्रयुक्त छंद-दोहा, सवैया, कवित्त, हरिगीत, झूलना, छप्पय, चौपाई।

**रस रत्नाकर–**(इसकी दो प्रतियाँ पोथी खाना जयपुर में ग्रं.सं. 3699 एवं 1911 पर उपलब्ध है। पत्र संख्या-243, रचनाकाल-सम्वत् 1848, शुक्रवार। माप-16×27.7 से.मी.)

यह श्रृंगार के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डालता है साथ नवरसों का भी पूर्ण वर्णन है। प्रस्तुत सवैया में बाँसुरी वर्णन देखिये–

**याहि धरै अधरा मन मोहन मोहत मोहनी मंत्र सुनाइकें।**
**याहि के ओज मनोज रह्यो सब तीर तुनी रन ते बरसाइकें।।**
**दैया कहा करि है जगदीश परी कुलवंति न दूभर आइकें।**
**चाहति उजर बासु कियो बंसुरी यह बाँस की आप कहाइकें।। 175।।**

प्रयुक्त छंद-दोहा, सवैया, कवित्त, रेखता।

**अलंकार कौतुक–**(ग्रन्थ संख्या 1731 पत्र-30, माप-23×18.5 से.मी.) प्रस्तुत ग्रन्थ में दो सौ अलंकार एवं उनके भेद, लक्षणोंका सोदाहरण वर्णन है। प्रयुक्त छंद-दोहा, सवैया एवं कवित्त।

**जगत रस रंजन–**(ग्रन्थ की प्रति देवर्षि कलानाथ शास्त्री के निजी संग्रहालय में है। पत्र सं. 30, माप-15.5×20.5 से.मी., रचनाकाल 1862 सं.) प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित बिहुतिहाव का उदाहरण देखिये-सवैया

**मिलि गोकुल ते बरसान कों जाति हीं ग्वालिनी बेचन बेस दही।**
**घन कानन में सब पाछें निहारि कें स्यामा को स्याम जू आइ गही।।**
**भरि अंक कियो हरि चुंबन त्यौं जगदीश करीलिय नाही नहीं।**
**चित चोंपर चीरति रंग रचावन लाज सों जा तन बात कही।। 94।।**

**किशोर सुख सागर–**(ग्रन्थ संख्या 11967-रा.प्रा.वि.प्र., जयपुर, पत्र-136 माप-18×24 से.मी. रचनाकाल 1835 कार्तिक अमावस्या) नायिका की रोमावली वर्णन देखिये–

**सूरति सिंगार की बढ़ी हैं उर-छीवन कौं**
**कैंधों बैस बैस कीनी बरछीयै ठढी है।**
**कैंधों अंग बागायति बीच सरौं दरषत**
**कैंधों कंत मन मौज मृग मद मदी है।।**
**छाजि छबि छटनि बिराजी रोम राजी**
**राजी राजी कबि राजी जगदीश जुक्ति पढ़ी है।**
**कामिनी उदर काम दीपक जरत नाभि**
**बिवर ह्वै माँनों धार काजर की कढ़ी है।। 206।।**

**वीर रस रत्नाकर (वीर हजारा)–**(ग्रं.सं.-49, रा.प्रा.वि.प्र. जयपुर, पत्र 27, माप-8.5×14 इंच)

**वीर रस का वर्णन देखिये ।। कवित्त।।**

**फोजन के फेरा होंन लागे राजगढ़**
**नेरा घेरा कैं घनेरा भय ताप तन तयौ है।**
**जाए रोली षेरा जरिबे कहँ उजेरा**
**तोब बारूद अंधेरा देषि टेरा द्रग दयौ है।।**
**कबि जगदीश सैल से रान मिलत हेरा**
**काढन षजेरा डुलि ढेरा रीति उयौ है।**

इसी भाँति 'लगनि पचीसी' ग्रन्थ का एक पद प्रस्तुत है जिसमें गोपियों के प्रेम का चर्मोत्कर्ष परिलक्षित हो रहा है-

**छौड़्यौ पति धर्म ताज लोक लाज कुल काज**
**सुबन समाजहूँ को नीर निज दाइ दे।**
**तेरी इतिं बाँसुरी कों सुन के मगन भई**
**लगनि नई के आई दरबर धाई दे।।**
**कबि जगदीश कैसें अब तू छिपत फिरै**
**औसो जग को है प्रीति उघरी छिपाइ दे।**
**पीतम कलार ए रे बचन चसक सों तू**
**अधर मधुर मद प्याइ दे जिवाइ दे।।**

अन्त में, ग्रन्थ प्रहेलिका प्रकाश की कुछेक पहेलियाँ प्रस्तुत हैं-

**पिय आये परदेस सौं ल्याये सरस कृसान।**
**कुल तिय बिरहिनि बापरी लषि-लषि छाँड़त प्रान।। 26 ।। मेघ।।**
**स्याम बरन मोटे घने जिनकी लाम्बी नाँक।**
**हाथी याकौं अरथ नहिं जानों और निसांक।। 86 ।। बैंगन।।**
**घर घर लिंग पुजात हैं तपसी जाको रूप।**
**जैंनी देव न मानियो औरो अर्थ अनूप।। 101 ।। शिवजी।।**

**निष्कर्ष**-महाकवि जगदीश भट्ट के सम्पूर्ण कृतित्व के अध्ययन एवं विवेचनोपरान्त यह स्वत: ही सिद्ध हो जाता है कि विशेषत: भारतीय काव्यशास्त्र को इनका अद्‌भुत सहयोग है तथा यह आचार्य पद हेतु उपयुक्त हैं। ठीक इसी भाँति रीतिकालीन काव्य परम्परा में जगदीश भट्ट का बेजोड़ सहयोग, योगदान है। आवश्यकता है इनके ग्रन्थों को प्रकाश में लाने की।

इसी संदर्भ में एक बात और कहना चाहूँगा राजस्थान में विभिन्न स्थानों पर लाखों हस्तलिखित ग्रन्थ शोधार्थियों, विद्वतजनों की राह जोह रहे हैं। यदि अज्ञात कवियों-रचनाकारों के कृतित्व पर शोध किया जाये तो निस्सन्देह हिन्दी साहित्य के इतिहास को पुन: नये सिरे से लिखना पड़े।

जगदीश भट्ट के समस्त ग्रन्थों से उदाहरण प्रस्तुत किया जाना संभव नहीं है क्योंकि शोध पत्र की अपनी एक सीमा होती है। अन्त में हस्तलिखित ग्रन्थों के विषय में आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करना मैं नैतिक कर्त्तव्य समझता हूँ-

1. ग्रन्थ के पृष्ठ के दोनों तरफ एक ही पत्रांक दिया गया है।
2. किसी शब्द, अक्षर, पंक्ति को मिटाने के लिए खड़िया, हल्दी या हरताल का प्रयोग किया गया है।
3. हैडिंग के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।
4. कलम द्वारा काली स्याही से लिखा गया है, कागज देशी है।
5. पूरी पंक्ति में अक्षर आपस में मिले हुए हैं।
6. अनुस्वार का प्रयोग वर्ण के ऊपर होता है, आधा शब्द नहीं लिखा है।
7. 'व' को 'ब', 'श' को 'स', 'ख' को 'ष' तथा 'श्री' को 'सी' लिखा गया है।
8. पत्र के दोनों तरफ उचित हाशिया छोड़कर लाल स्याही से खड़ी रेखाएँ खींची गई हैं।

इसी भाँति लगभग सभी दरबारी कवि इस ग्रन्थ परम्परा का भी अनुकरण किया करते थे-1. प्रारम्भ 2. मंगलाचरण 3. नृपकुल वर्णन 4. राजसभा वर्णन 5. ब्रजनिधि वर्णन या राज वर्णन 6. ग्रन्थ नामकरण 7. ग्रन्थ प्रयोजन 8. फलस्तुति या आशीर्वाद 9. उदाहरण 10. नगर वर्णन 11. मुख्य विषय 12. पुष्पिका 13. रचनाकाल 14. लिपिकाल 15. लिपिस्थान 16. लिपिकार 17. कविवंश परिचय 18. विशेष।

उपर्युक्त समस्त विवेचन एवं प्रमाणों के आधार पर यह स्वत: ही सिद्ध हो जाता है कि महाकवि जगदीश भट्ट रीतिकालीन काव्य परम्परा के मुख्य आधार स्तम्भ थे, हैं और रहेंगे। सुधी पाठकों एवं विद्वत इतिहास लेखकों को मात्र भूल सुधार करनी है। अस्तु।

## सन्दर्भ सूची-


1. मिश्र बन्धु-मिश्र बन्धु विनोद, पृ. 881
2. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी-हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, प्रथम खण्ड, पृ. 320
3. नन्द किशोर पारीक-राज दरबार और रनिवास, पृ. 137
4. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज साहित्य का इतिहास, पृ. 473
5. डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ-जगदीश भट्ट-राधाकृष्ण भक्ति कोश
6. पं. मथुरानाथ शास्त्री-साहित्य वैभवम्, पृ. 555
7. देवर्षि कलानाथ शास्त्री-जो इस कवि के वंशज हैं, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित संस्कृत, हिन्दी, ब्रज एवं अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान हैं, के मतानुसार।
8. जगदीश भट्ट-किशोर सुख सागर (हस्तलिखित ग्रन्थ) छंद सं. 93
9. डॉ. गजानन मिश्र-जयपुर के हिन्दी कवियों के योगदान का मूल्यांकन, पृ. 140
   1. काव्य विनोद 2. किशोर सुख सागर 3. जगत रस रंजन 4. जगत भक्ति विलास 5. भक्ति अर्गजा 6. पद मकरन्द 7. पद पंकज 8. लक्ष्यात्मक ग्रन्थ 9. ब्रह्मवैवर्त पुराण का अनुवाद 10. वल्लभाचार्य के षोडश ग्रन्थों का अनुवाद 11. माघ का शिशुपाल वध 12. शांति पर्व एवं वन पर्व का अनुवाद 13. भर्तृहरि शतक का अनुवाद 14. अमरूशतक का अनुवाद।
10. डॉ. मोतीलाल मेनारिया-राजस्थान का पिंगल साहित्य, पृ. 154
   इन्होंने गजानन मिश्र द्वारा व्यक्त ग्रन्थों में एक ग्रन्थ और जोड़ दिया है-'शतकत्रय पद्यानुवाद'।
11. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज साहित्य का इतिहास, पृ. 473
   1. काव्य विनोद 2. किशोर सुख सागर 3. जगत निरंजन (वास्तव में इस ग्रन्थ का नाम 'जगत रस रंजन' है) 4. जगत भक्ति विलास 5. भक्ति अरगजा 6. पद मकरंद 7. पद पंकज और कई अनुवाद।
12. नागरी प्रचारिणी सभा-काशी-हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (प्रथम खण्ड)
13. डॉ. सन्त कुमार शर्मा-ब्रजनिधि और उनका कविमण्डल (शोध प्रबन्ध-राजस्थान वि.वि.) पृ.सं. 42
14. डॉ. पार्वती उपाध्याय-व्यक्तित्व एवं कृतित्व : महाराजा सवाई प्रताप सिंह 'ब्रजनिधि' जयपुर (शोध प्रबन्ध-राजस्थान वि.वि. जयपुर) पृ. 240
15. पण्डित गोपाल नारायण बहुरा-लिट्ररेरी हैरिटेज ऑफ अम्बर एण्ड जयपुर
16. (१) प्रताप पीयूष, ग्रं.सं. 3405 (२) रस रत्नाकर, ग्रं.सं. 1911 (३) अलंकार कौतुक, ग्रं.सं. 1731 (४) अलंकार प्रकाश, ग्रं.सं. 11967 (५) शिख-नख वर्णन, ग्रं.सं. 3730 (६) गोविन्द जू को नख शिख-ग्रं.सं. 1969 (७) जगत रस रंजन-देवर्षि कलानाथ शास्त्री के निजी संग्रहालय में (८) किशोर सुख सागर-ग्रं.सं. 11967 (९) सरस्वती प्रसाद-ग्रं.सं. 11967 (१०) वीर रस रत्नाकर-ग्रं.सं. 49 (११) बहादुर विजै रासो-ग्रं.सं. 1376 (१२) माधो विजय विनोद-ग्रं.सं. 3994 (१३) शीताष्टक-ग्रं.सं. 3569 (१४) छक पचीसी-ग्रं.सं. 5382 (१५) लगनि पचीसी-ग्रं.सं. 1163 (3) (१६) ब्रजनिधि मंगल व्याहुलो-ग्रं.सं. 1369 (१७) कवित्त संग्रह-ग्रं.सं. 227 (१८) शिव स्तुति-ग्रं.सं. 12371 (१९) कवित्त महादेवजी रा-ग्रं.सं. 1377 (२०) एकलिंगजी री निसानी-ग्रं.सं. 4108 (२१) अमरू शतक (भाषा)-ग्रन्थ देवर्षि कलानाथ शास्त्री के निजी संग्रहालय में। (२२) पीयूषपान-ग्रं.सं. 7706 (२३) मुद्राराक्षस (भाषा)-ग्रं.सं. 3544 (२४) शल्य पर्व भाषा (महाभारत)-ग्रं.सं. 3795 (२५) वन पर्व भाषा (महाभारत)-ग्रं.सं. 2383 एवं 3795 (२६) जगत भक्ति विलास-ग्रन्थ देवर्षि कलानाथ शास्त्री के निजी संग्रहालय में। (२७) बसन्तराज शकुन वचनिका-ग्रं.सं. 1503 (२८) प्रहेलिका प्रकाश-ग्रं.सं. 3627